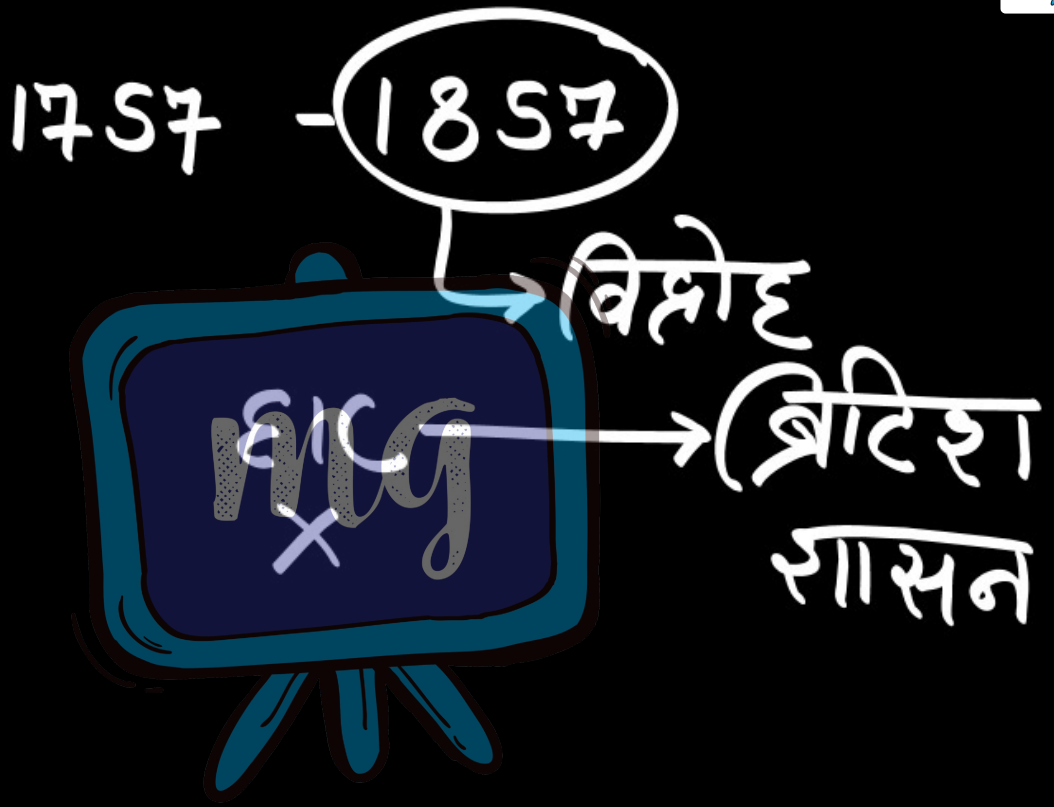

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
12th HISTORY
ई-पाठशाला
महात्मा गाँधी और
राष्ट्रीय आंदोलन
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
06 OCT 2026 || 03:30 PM

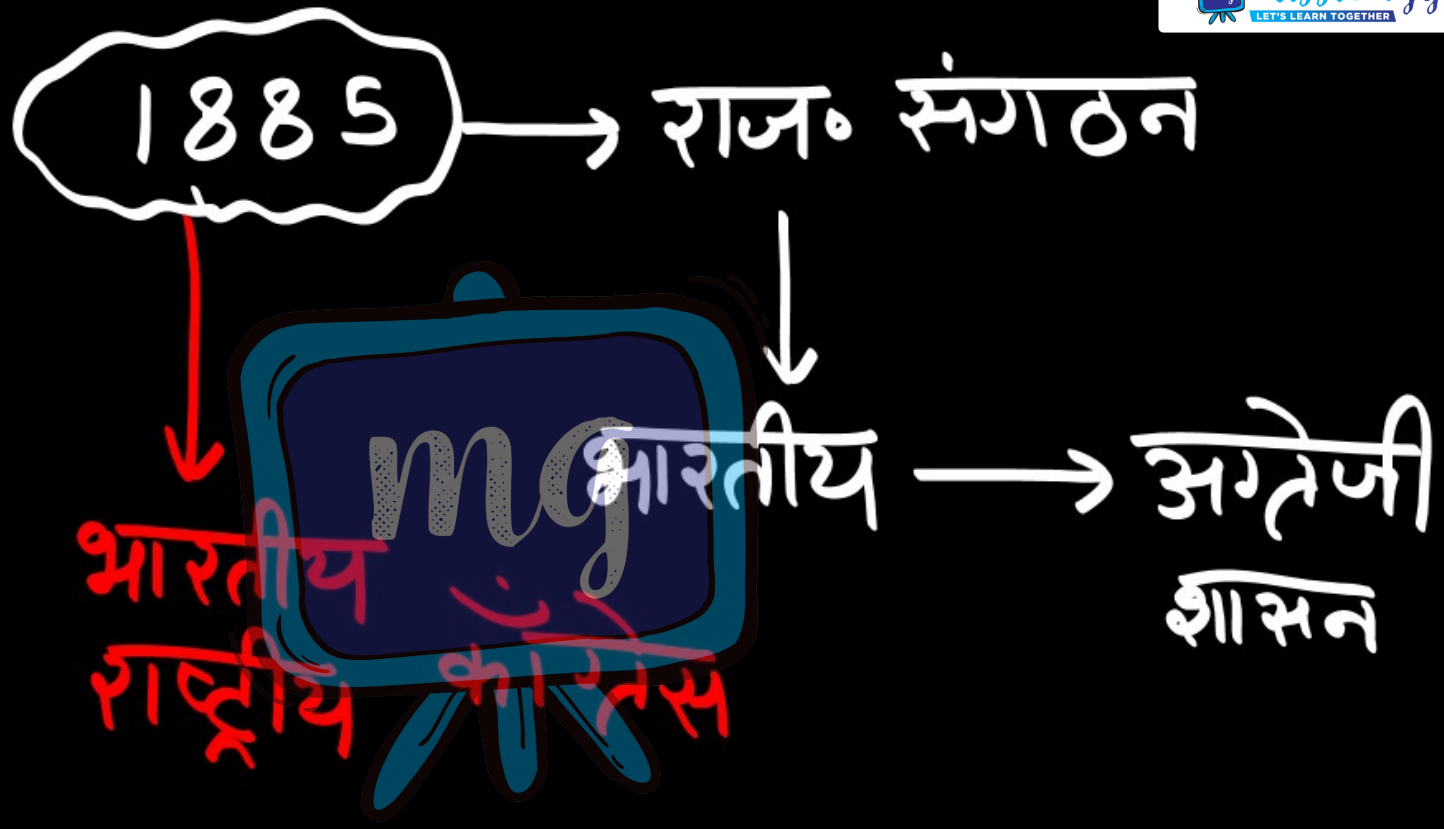
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

MG. राष्ट्रीय आंदोलन



1947
आज़ादी

अंग्रेज़
X

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

महात्मा गाँधी



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

S.A

1885 — 1893 — 1905

भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस



गोखले

नरम '+'

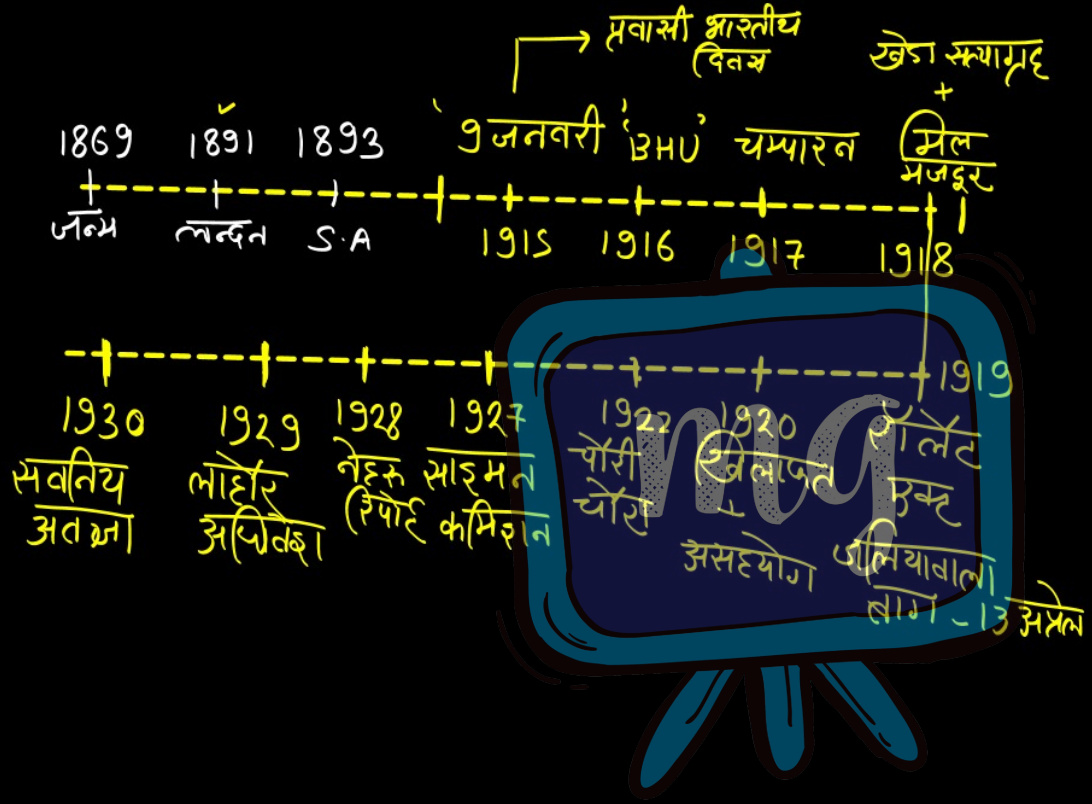
अपील

गरम '-'

लाला लाजपत
बाल गंगाधर तिलक
बिपिन चन्द्र पाल
लाल, बाल, पाल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1930 सविनय अवज्ञा गोलमेज I

1931 गोलमेज 2

1932 गोलमेज

1935 कानून भा० स० अधिनियम

1937 चुनाव

1939 इस्तीफा।

1948 म्यू

1947 आजादी

1946 केबिनेट

1942 भारत छोड़ो

1942 C.M

mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1935 ⟶ 1937

चुनाव



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जन नेता

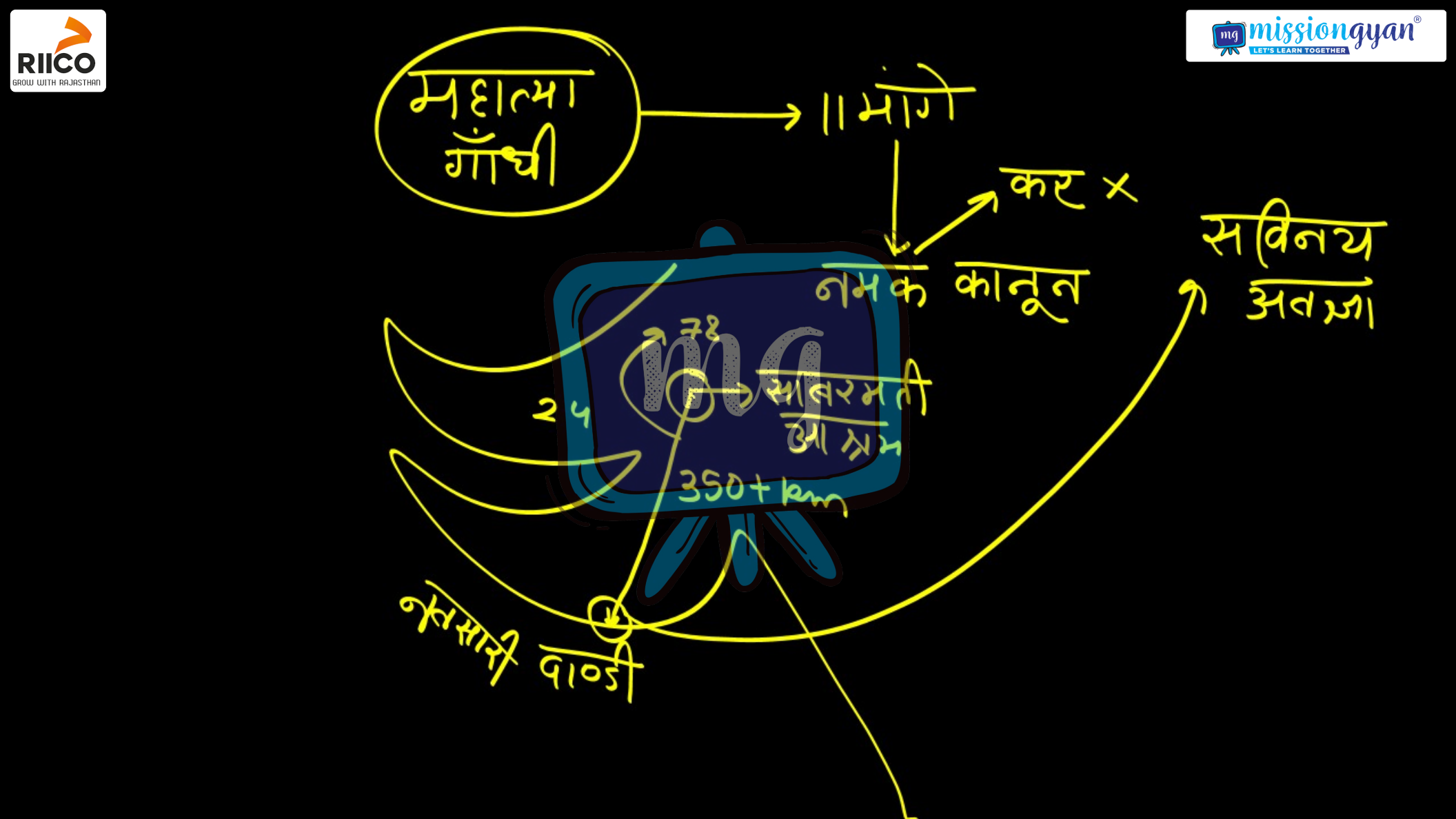
लोगो जैसे

चरखा - खादी

अफवाहें

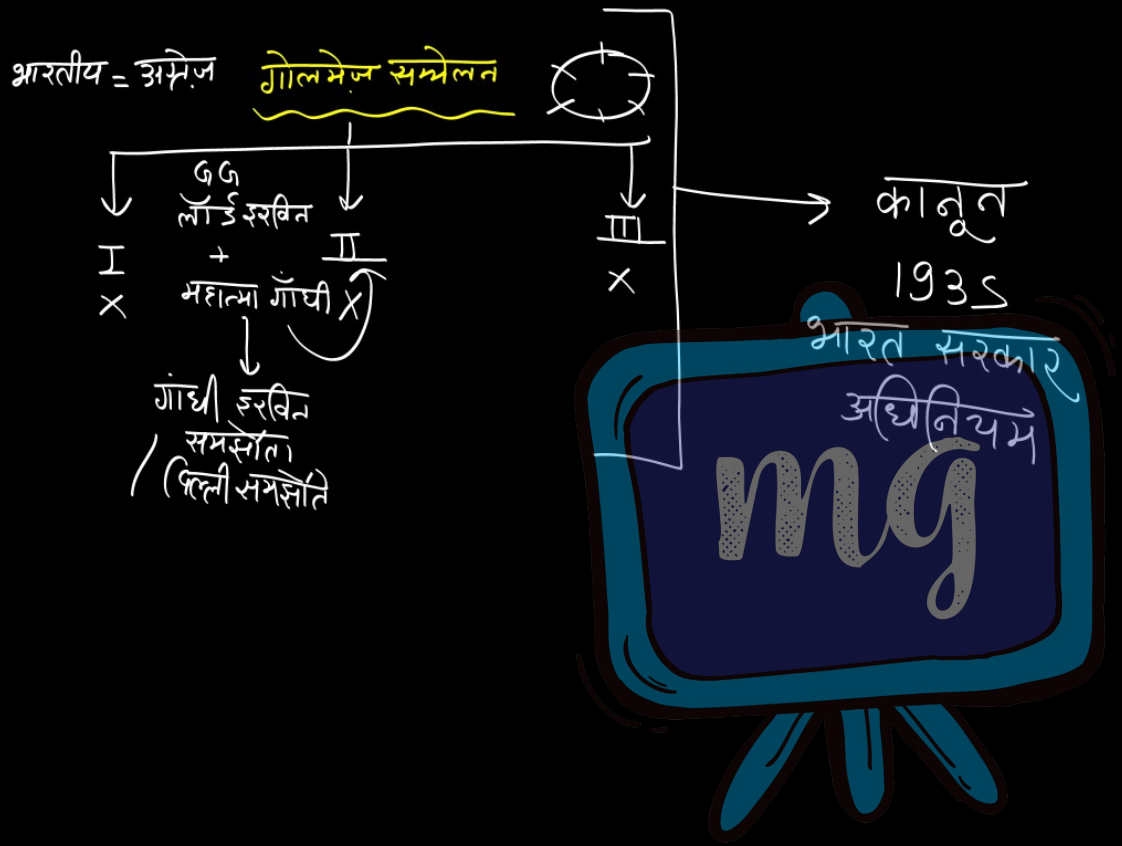
1. चमत्कारी
2. दैविक

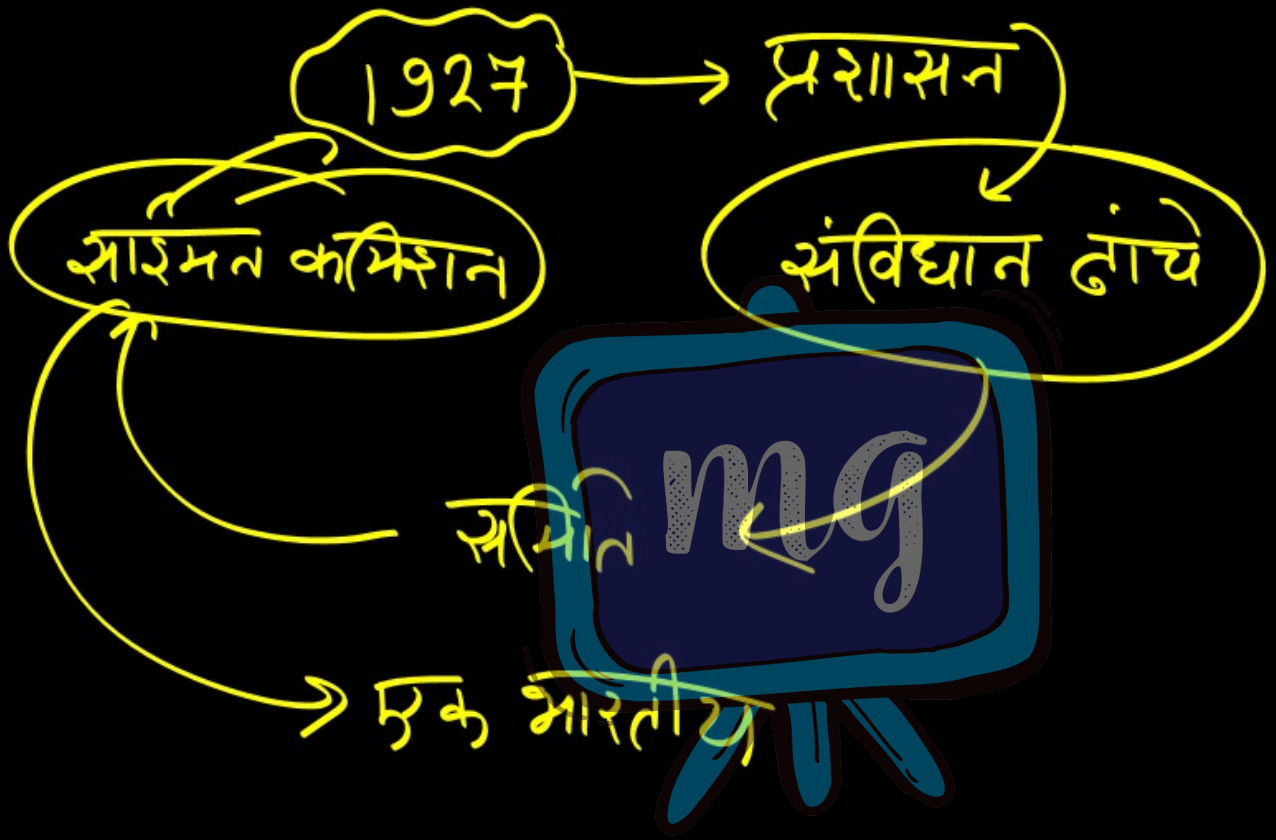



महात्मा गाँधी
॥ भांगे
कर ×
नमक कानून
सविनय अवज्ञा
78
साबरमती आश्रम
350+ km
24
ऐतिहासिक दांडी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

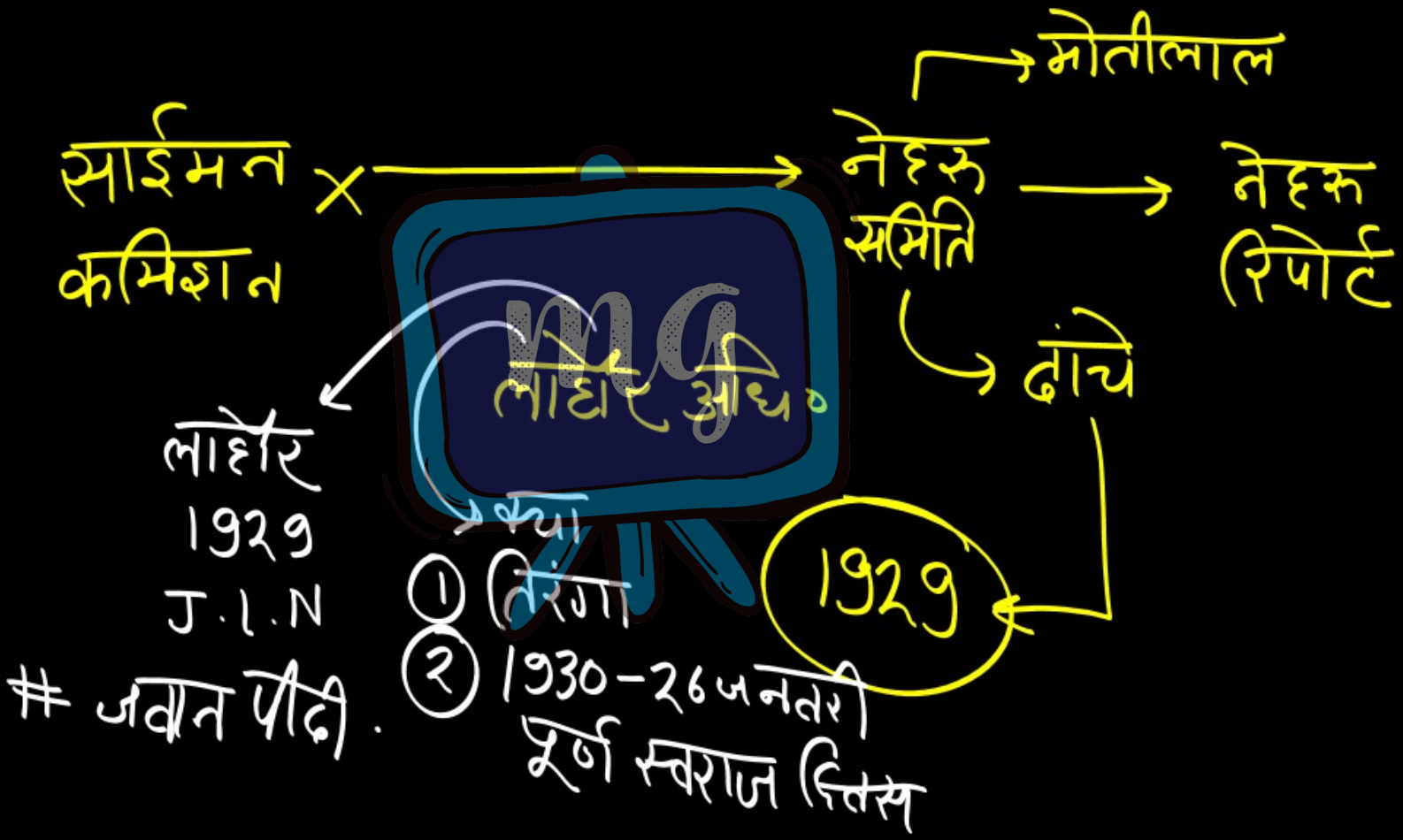
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER




1927
प्रशासन
साइमन कमिशन
संविधान ढांचे
समिति
एक भारतीय

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

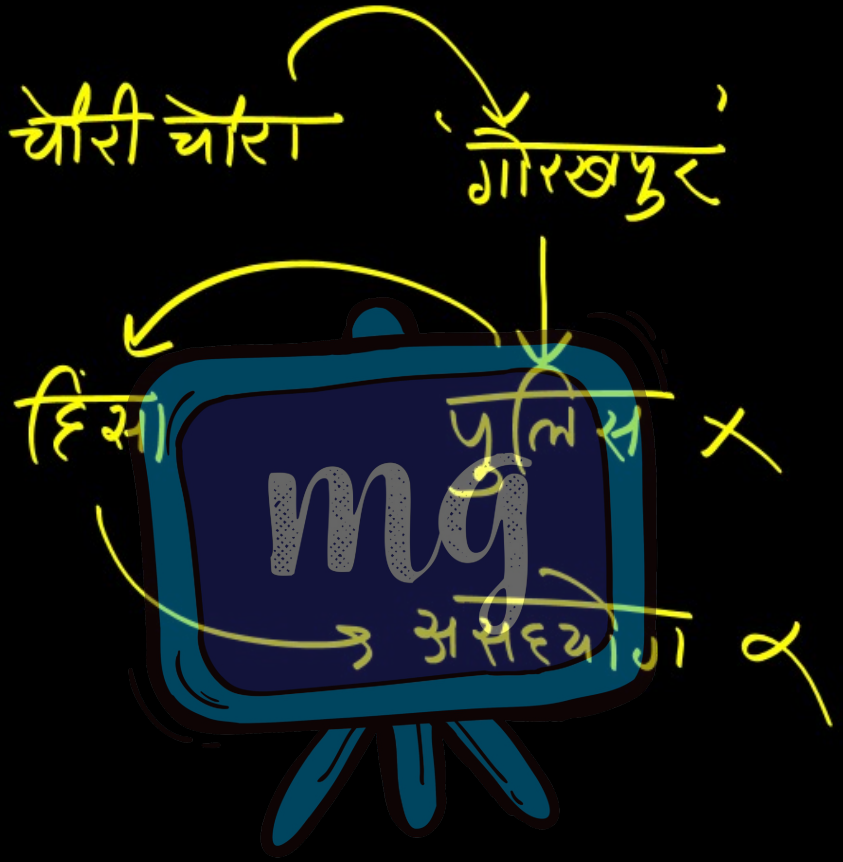
mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1922 → सामाजिक

↓

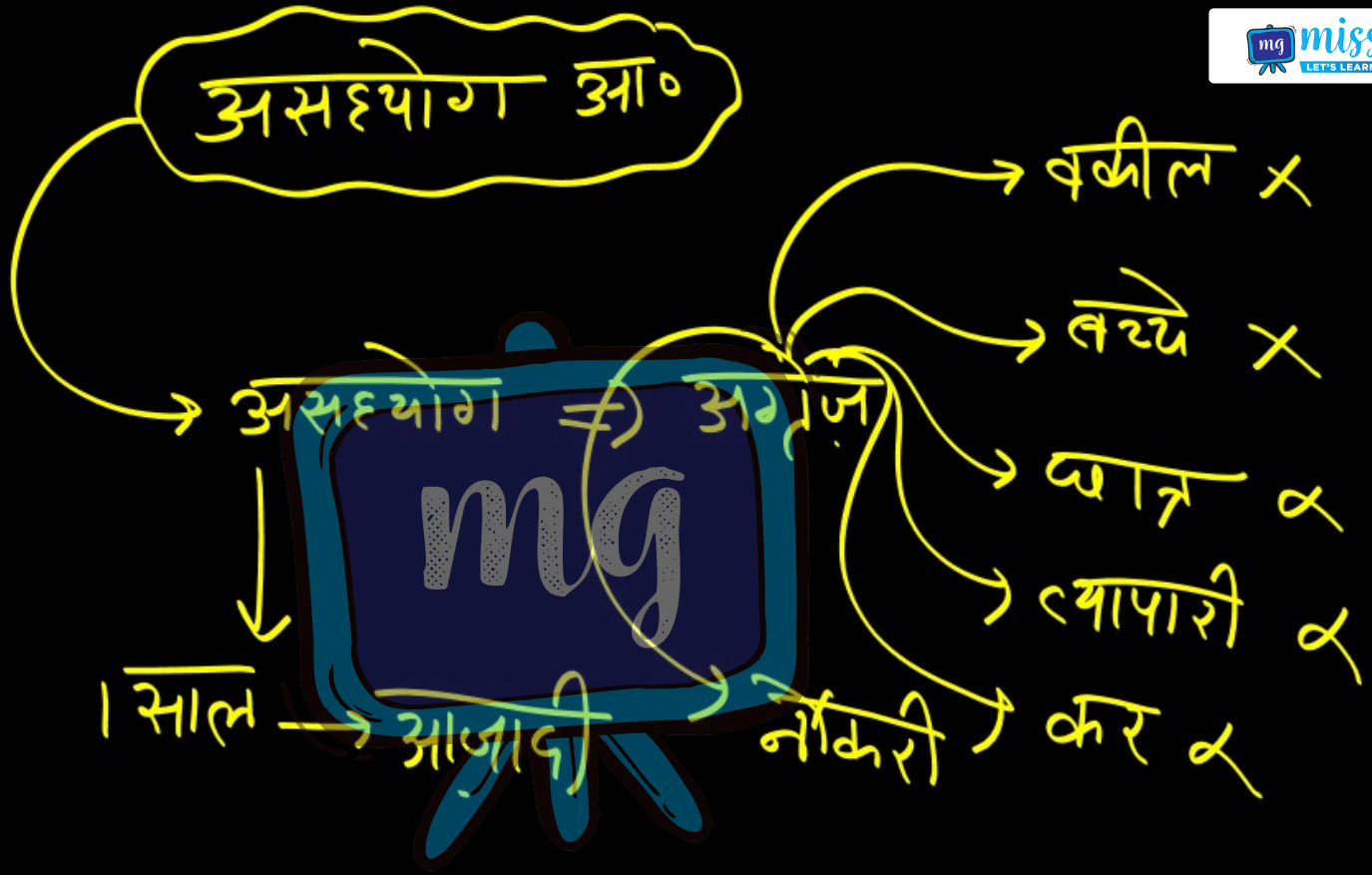
अस्पृश्यता ×

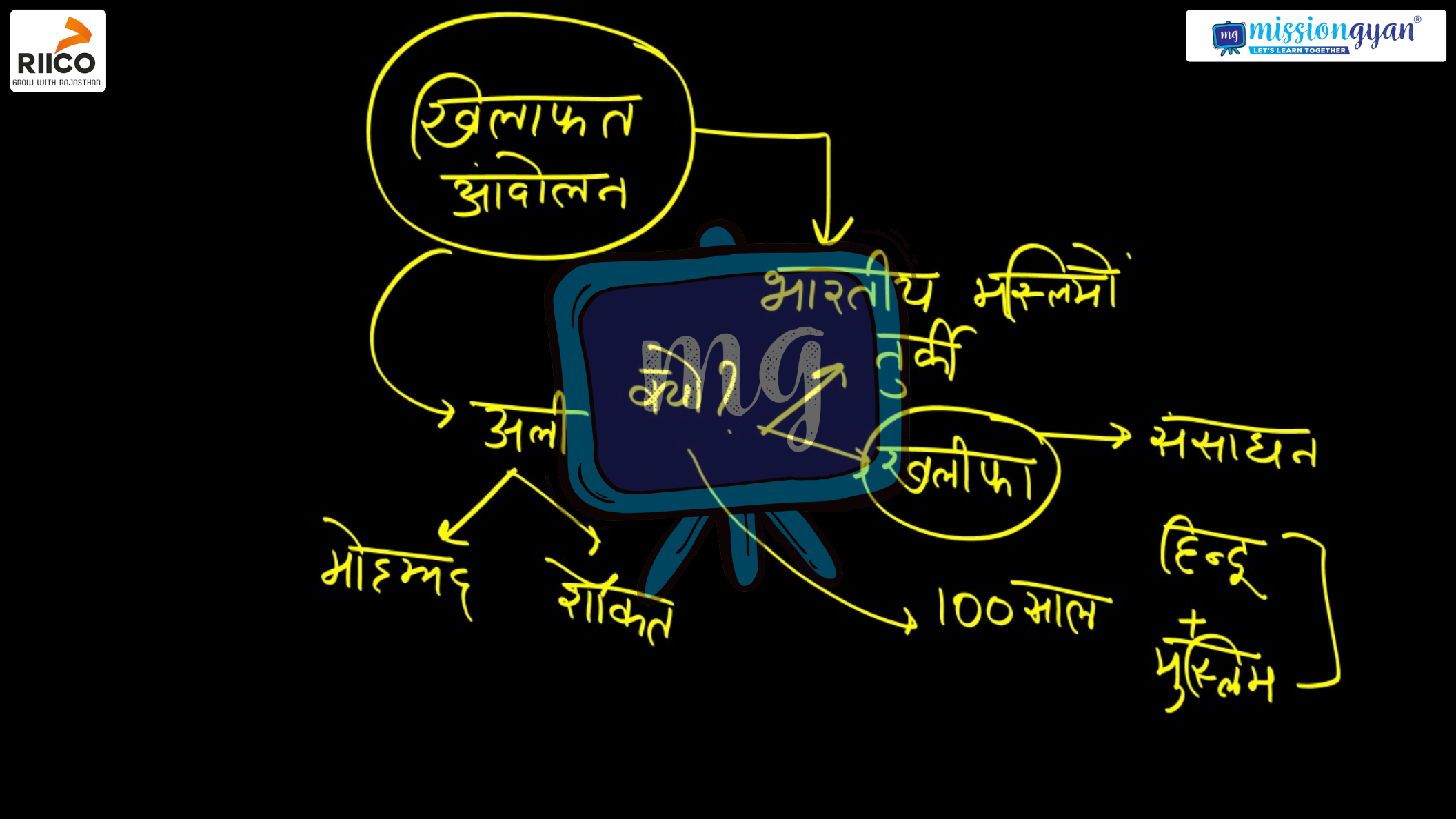


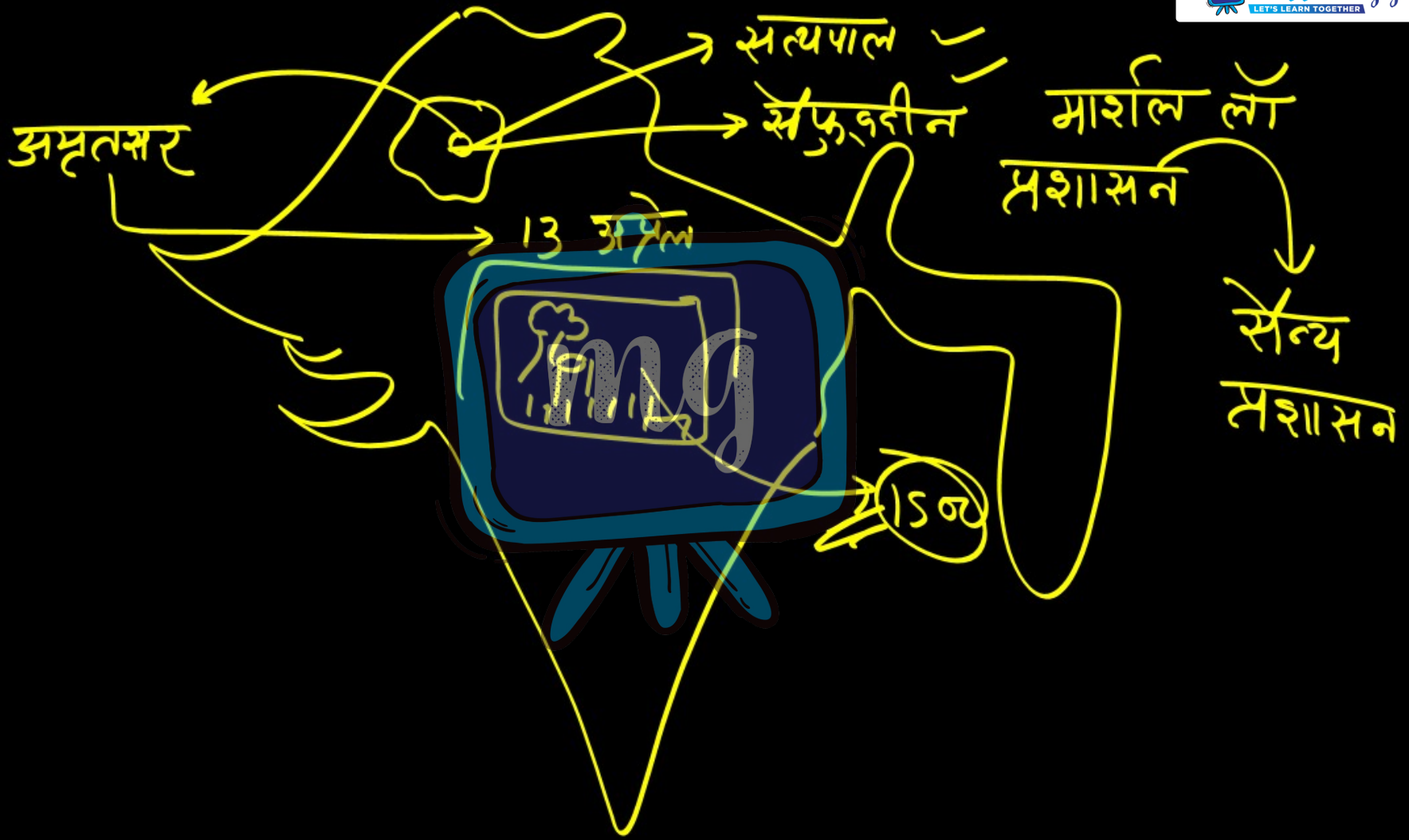

चौरी चौरा
गौरखपुर
हिंसा
पुलिस
असहयोग

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER




खिलाफत आंदोलन
भारतीय मुस्लिमों
अली
मोहम्मद
शौकत
100 साल
हिन्दू + मुस्लिम


अमृतसर
सत्यपाल
सैफुद्दीन
13 अप्रैल
मार्शल लॉ
प्रशासन
सैन्य
प्रशासन
1919

क्षेत्रीय आन्दोलन

'राष्ट्रीय'



Q. आंदोलन

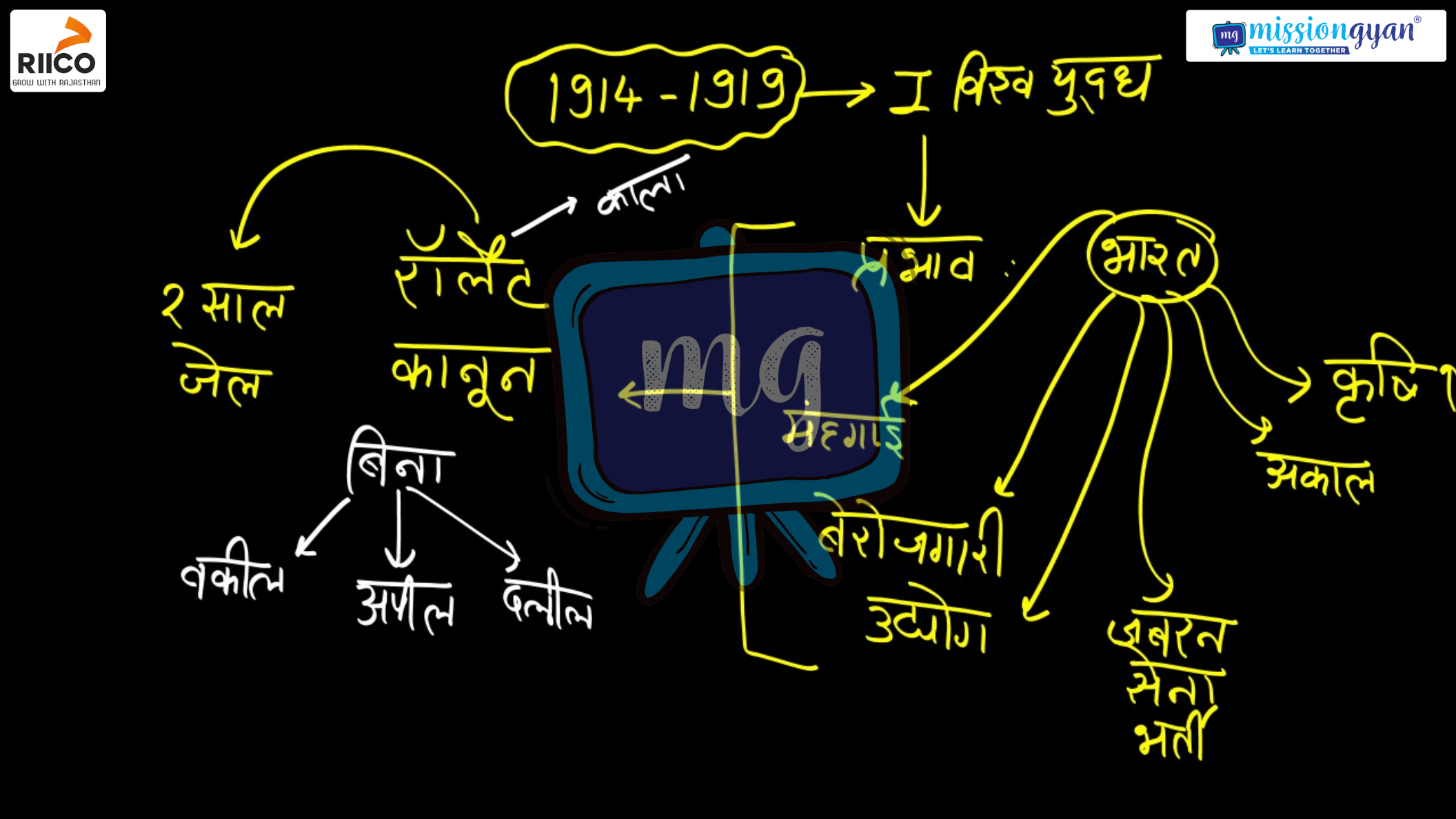
a) चम्पारन सत्याग्रह

b) खेड़ा "

c) अहमदाबाद मिल मजदूर

Q. प्रस्तावना परिचय

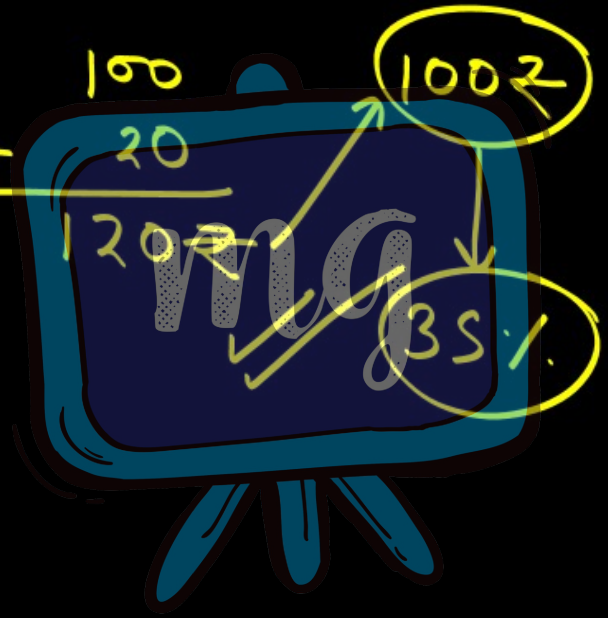
Q. रॉलेट कानून


1914 - 1919
I विश्व युद्ध
प्रभाव
भारत
रॉलेट कानून
काला
2 साल जेल
बिना
वकील
अपील
दलील
महंगाई
बेरोजगारी
उद्योग
जबरन सेना भर्ती
अकाल
कृषि

अहमदाबाद

मिल मजदूर आ०

मिल मजदूर	100
+	20
	120 ₹



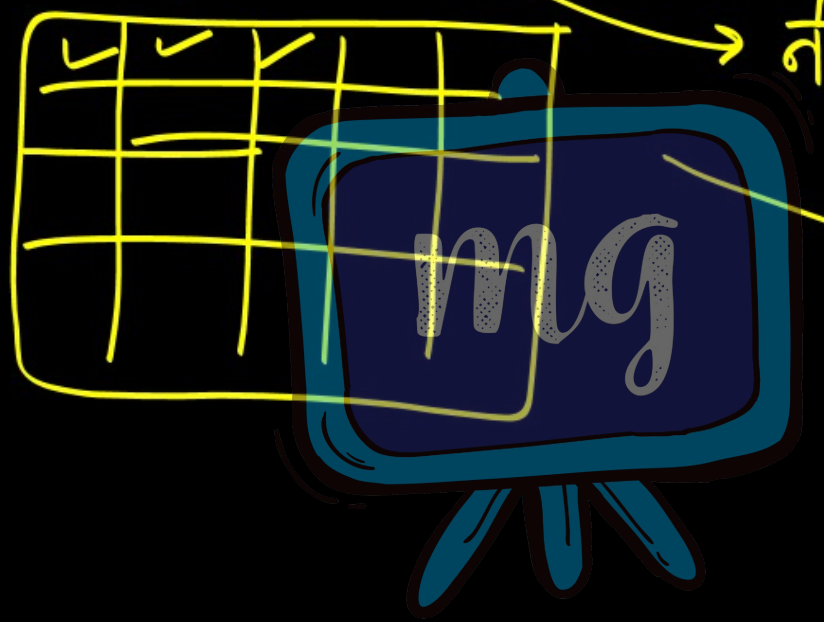
चम्पारण → 1917

Germany

नील

बंजर

1st सत्याग्रह



स्वयं की उद्घोषणा करता एक नेता

- मोहनदास करमचंद गाँधी विदेश में (अफ्रीका) दो दशक रहने के बाद जनवरी, 1915 में अपनी गृहभूमि वापस आए।
- चन्द्रन देवनेसन – "अफ्रीका ने ही गाँधी जी को महात्मा बनाया"।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महात्मा गाँधी ने अफ्रीका में ही पहली बार सत्याग्रह के रूप में जानी गई अहिंसात्मक विरोध की अपनी विशिष्ट तकनीक का इस्तेमाल किया।
- 1893 से 1915 तक अफ्रीका में भेदभाव विरोधी आन्दोलनों का नेतृत्व किया।
- 1915 में जब गाँधी जी भारत आए, उस समय तक भारत पहले मुकाबले राजनीतिक रूप से कहीं अधिक सक्रिय हो गया था।
- प्रमुख शहरों और कस्बों में अब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखाएँ थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1905-07 के स्वदेशी आन्दोलन के माध्यम से इसने व्यापक रूप से मध्य वर्गों के बीच अपनी अपील का विस्तार कर लिया था।

बाल गंगाधर तिलक	→	महाराष्ट्र
विपिन चंद्र पाल	→	बंगाल
लाला लाजपत राय	→	पंजाब

- ये स्वदेशी आन्दोलन के मुख्य नेता था–
- ये तीनों लाल, बाल, पाल के रूप में जाने जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन नेताओं ने जहां औपनिवेशिक शासन के प्रति लड़ाकू विरोध का समर्थन किया। वहीं 'उदारवादियों' का एक समूह क्रमिक व लगातार प्रयास करते रहने के विचार का हिमायती था।
- उदारवादियों में प्रमुख गाँधी के मान्य राजनीतिक परामर्शदाता गोपाल कृष्ण गोखले के साथ ही मोहम्मद अली जिन्ना थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- गोखले ने गाँधी जी को एक वर्ष तक ब्रिटिश भारत की यात्रा करने की सलाह दी जिससे वे भारत के लोगों को समझ सकें।
- गाँधी जी की पहली सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी, 1916 में 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' के उद्घाटन समारोह में हुई।
- भाषण – धनी व सजे-सँवरे भद्रजनों की उपस्थिति और 'लाखों गरीब' भारतीयों की अनुपस्थिति के बीच की विषमता पर अपनी चिंता प्रकट की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- भारतीय राष्ट्रवाद वकीलों, डॉक्टरों और जमींदारों जैसे विशिष्ट वर्गों द्वारा निर्मित था।
- गाँधी जी भारतीय राष्ट्रवाद को सम्पूर्ण भारतीय लोगों को और अधिक अच्छे ढंग से प्रतिनिधित्व करने में सक्षम बनाने चाहते थे।
- 1917 का अधिकांश समय महात्मा गाँधी को किसानों के लिए काश्तकारी की सुरक्षा के साथ-साथ अपनी पसंद की फसल उपजाने की आजादी दिलाने में बीता।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1917 – चम्पारन किसान सत्याग्रह
- 1918 में गाँधी जी अपने गृह राज्य, गुजरात में दो अभियानों में संलग्न रहे।
- 1918 – अहमदाबाद मील मजदूर आंदोलन
- 1918 – खेडा किसान सत्याग्रह
- चम्पारन, अहमदाबाद और खेडा में की गयी पहल से गाँधी जी एक ऐसे राष्ट्रवादी के रूप में उभरे जिनमें गरीबों के लिए गहरी सहानुभूति थी।
- ये सभी स्थानीय संघर्ष थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

रॉलेट एक्ट आन्दोलन - 1919 ई.

- भारतीय प्रेस और अन्य आतंकी घटनाओं पर प्रतिबंध लगाने के लिए सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली एक समिति की संस्तुतियों के आधार पर इन कठोर उपायों को लागू किया गया।
- "बिना वकील, बिना अपील और बिना दलील का कानून"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- गाँधी जी ने देशभर में 'रॉलेट एक्ट' के खिलाफ एक अभियान चलाया और इसे 'काला कानून' कहा।
- पंजाब में विशेष रूप से कड़ा विरोध हुआ।
- पंजाब जाते समय गाँधी जी को कैद कर लिया गया।
- स्थानीय कांग्रेसजनों को गिरफ्तार कर लिया गया था।
  1. डॉ. सैफूद्दीन किचलु
  2. सत्यपाल गौतम
- पंजाब की स्थिति और तनावपूर्ण हो गयी।

जलियांवाला बाग हत्याकांड – 13 अप्रैल, 1919

- अमृतसर में अंग्रेज ब्रिगेडियर ने एक राष्ट्रवादी सभा पर गोली चलाने का हुक्म दिया तब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के नाम से जाने गए इस हत्याकाण्ड में चार सौ से अधिक लोग मारे गये।

रॉलेट सत्याग्रह से ही गाँधी जी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए।

- अब गाँधी जी ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ 'असहयोग' अभियान की माँग कर दी।
- जो भारतीय उपनिवेशवाद का खात्मा करना चाहते थे उनसे आग्रह किया गया कि वे स्कूल, कॉलेज और न्यायालय न जाएँ तथा कर न चुकाएँ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- गाँधी जी ने कहा कि यदि असहयोग का ठीक ढंग से पालन किया जाये तो भारत एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त कर लेगा।
- अपने संघर्ष का विस्तार करते हुए उन्होंने खिलाफत आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए।



खिलाफत आंदोलन

- भारतीय मुस्लिम समुदाय का अंग्रेजों के खिलाफ था।
- कारण – अंग्रेजों द्वारा तुर्की के शासक के साथ अपमानजनक व्यवहार किया जा रहा था।
- उद्देश्य/माँग – तुर्की शासक कमाल आतातुर्क द्वारा समाप्त किए गए सर्व-इस्लामवाद के प्रतीक खलीफा की पुनर्स्थापना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

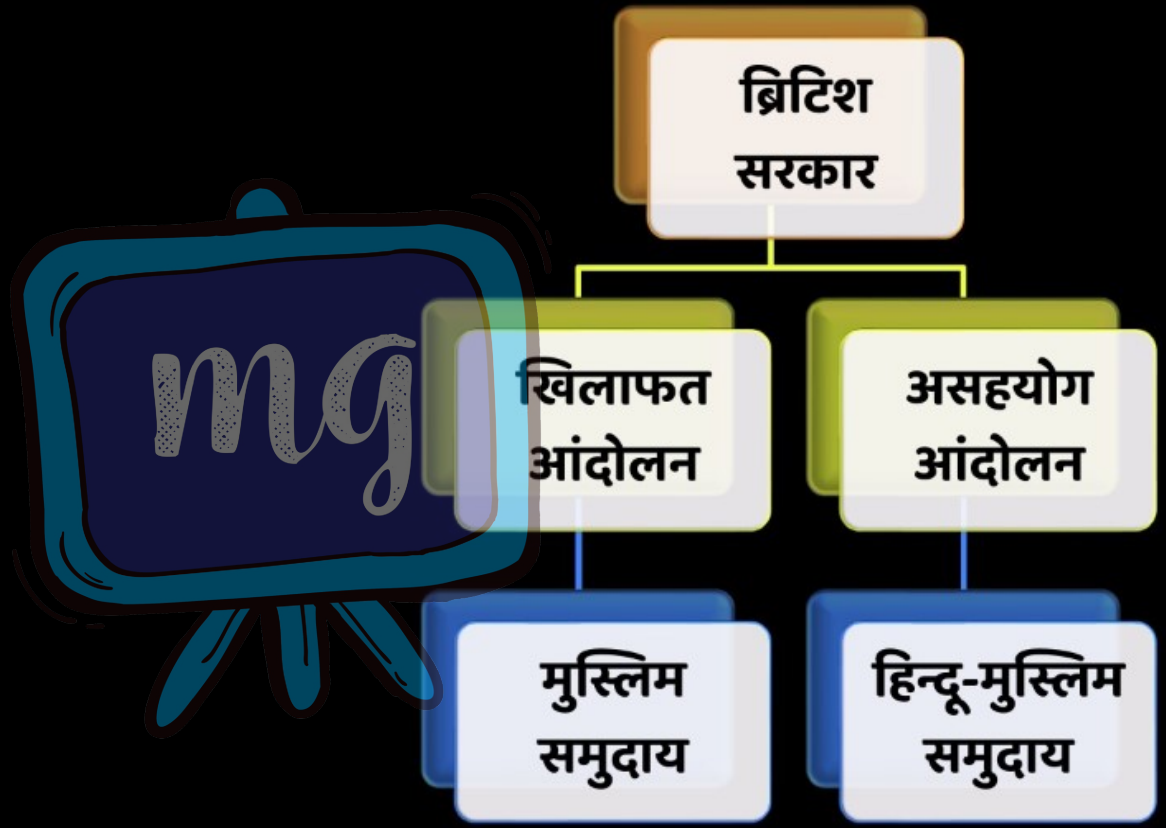
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

एक लोकप्रिय आंदोलन की तैयारी

- गाँधी जी ने यह आशा की थी कि असहयोग और खिलाफत को साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख धार्मिक समुदाय हिन्दू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।
- ये चीजें औपनिवेशिक भारत में बिल्कुल ही अभूतपूर्व थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- विद्यार्थियों ने सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्कूलों और कॉलेजों में जाना छोड़ दिया।
- वकीलों ने अदालत में जाने से मना कर दिया।
- कई नगरों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चले गये।
- देहात भी असंतोष से आंदोलित हो रहा था।
- उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों ने वन्य कानूनों की अवहेलना कर दी।
- अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुमाऊँ के किसानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान ढोने से मना कर दिया।
- 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरुप अंग्रेजी राज की नींव हिल गई।
- आंदोलन में कई स्थानों पर राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवज्ञा की गई।
- इसके लिए परित्याग और स्व-अनुशासन आवश्यक था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- फरवरी, 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रान्त के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी।
- इस अग्नि कांड में कई पुलिस वालों की जान चली गयी।
- हिंसा की इस कार्यवाही से गांधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा।
- आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- स्वयं गांधी जी को मार्च, 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया।
- जज ब्रुमफील्ड ने गांधी जी को 6 वर्षों की जेल की सजा सुनाई।
- लेकिन जज ब्रूमफील्ड ने कहा कि – "यदि भारत में घट रही घटनाओं की वजह से सरकार के लिए सजा के इन वर्षों में कमी और आपको मुक्त करना संभव हुआ तो इससे मुझसे ज्यादा कोई प्रसन्न नहीं होगा।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जन नेता :-

- 1922 तक गांधी जी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एकदम परिवर्तित कर दिया।
- अब यह व्यावसायिकों व बुद्धिजीवियों का ही आंदोलन नहीं रह गया था, अब हजारों की संख्या में किसानों, श्रमिकों और कारीगरों ने भी इसमें भाग लेना शुरु कर दिया।

- उन्होंने इस बात की प्रशंसा की कि गाँधी जी इनकी ही तरह के वस्त्र पहनते थे, उनकी ही तरह रहते थे और उनकी ही भाषा में बोलते थे तथा उनसे घनिष्ठ संबंध भी स्थापित कर लेते थे।
- वे अन्य नेताओं की तरह सामान्य जनसमूह से अलग नहीं खड़े होते थे।
- गाँधी जी लोगों के बीच एक साधारण धोती में जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- प्रत्येक दिन का कुछ हिस्सा वे चरखा चलाने में बिताते थे।
- सूत कताई के कार्य ने गाँधी जी को पारंपरिक जाति व्यवस्था में प्रचलित मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम की दीवार को तोड़ने में मदद दी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अफवाहें :–

- गाँधी जी जहां भी गए वहीं उनकी चमत्कारिक शक्तियों की अफवाहें फैल गयीं।
- गाँधी जी का विरोध करने वालों के लिए भयंकर परिणाम की बात बताती कहानियां थी।
- गाँधी जी की आलोचना करने वाले गाँव के लोगों के घर रहस्यात्मक रूप से गिर गए अथवा उनकी फसल चौपट ओ गयी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उनके भाषणों के दौरान कैसा माहौल होता था इस पर गोरखपुर के एक हिंदी समाचारपत्र ने यह रिपोर्ट लिखी है :

- मटनी में गाँधी जी ने स्थानीय जनता को संबोधित किया और इसके बाद ट्रेन गोरखपुर के लिए रवाना हो गयी।
- नूनखार, देवरिया, गौरी बाजार, चौरी-चौरा और कुसुमही (स्टेशनों) पर 15 से 20 हजार से कम लोग नहीं थे.....

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महात्मा जी कुसुमीही के दृश्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि जंगल के बीच स्थित होने के बावजूद उस स्टेशन पर 10,000 से कम लोग नहीं थे। प्रेम से अभिभूत होकर कुछ लोग रोते हुए देखे गए।
- देवरिया में लोग गांधी जी को भेनी (दान) देना चाहते थे किंतु इसे उन्होंने गोरखपुर में देने को कहा। लेकिन चौरी-चौरा में एक मारवाड़ी सज्जन ने किसी तरह उन्हें कुछ दे दिया। इसके बाद यह क्रम रुका ही नहीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एक चादर फैला दी गई जिस पर रुपयों और सिक्कों की बारिश होने लगी।
- यह दृश्य था ... गोरखपुर स्टेशन के बाहर महात्मा एक ऊँची गाड़ी पर खड़े हो गए और लोगों ने कुछ मिनटों के लिए उनके दर्शन कर लिए।
- चरखे के साथ महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रवाद की सर्वाधिक स्थायी पहचान बन गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1921 में दक्षिण भारत को यात्रा के दौरान गाँधी जी ने अपना सिर मुंडवा लिया और गरीबों के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करने के लिए उन्होंने सूती वस्त्र पहनना आरंभ कर दिया।
- उनका यह नया रूप तपस्या और संयम का प्रतीक भी बना और ये ऐसी विशेषताएं थीं जिनका गांधी जी, आधुनिक विश्व की उपभोक्तवादी संस्कृति के प्रतिउत्तर में, गुणगान करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महात्मा गाँधी फरवरी 1924 में जेल से रिहा हो गए और अब उन्होंने अपना ध्यान घर में बुने कपड़े (खादी) को बढ़ावा देने तथा छूआ-छूत को समाप्त करने पर लगाया।
- गाँधी जी राजनीतिक जितने थे उतने ही वे समाज सुधारक थे। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता के योग्य बनने के लिए भारतीयों को बाल विवाह और छूआ-छूत जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त होना पड़ेगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एक मत के भारतीयों को दूसरे मत के भारतीयों के लिए सच्चा संयम लाना होगा और इस प्रकार उन्होंने हिंदू-मुसलमानों के बीच सौहार्द्र पर बल दिया।
- असहयोग आंदोलन समाप्त होने के कई वर्ष बाद तक गाँधी जी ने अपने आपको समाज सुधार कार्यों पर केन्द्रित रखा।
- 1928 ई. में उन्होंने पुनः राजनीति में प्रवेश करने की सोची।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

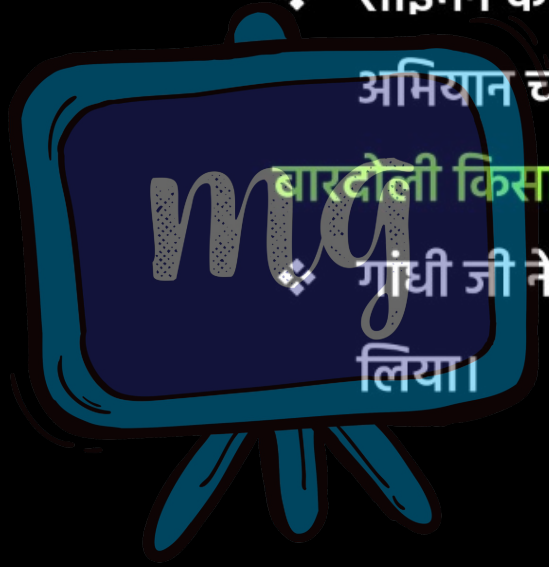
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

साईमन कमीशन – 1927

- साईमन कमीशन के विरुद्ध अखिल भारतीय अभियान चलाया जा रहा था।

बारदोली किसान आंदोलन – 1928

- गांधी जी ने इन दोनों आंदोलनों में भाग नहीं लिया।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1929 कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन

- यह अधिवेशन दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था–
  1. जवाहर लाल नेहरु का अध्यक्ष के रूप में चुनाव जो युवा पीढ़ी को नेतृत्व सौंपने का प्रतीक था।
  2. 'पूर्ण स्वराज' अथवा पूर्ण स्वतंत्रता की उद्घोषणा।
- अब राजनीति की गति एक बार फिर बढ़ गई थी।
- 26 जनवरी 1930 को पहला पूर्ण स्वराज दिवस मनाया गया।

दाण्डी यात्रा

- गाँधी जी ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश सरकार के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक, जिसने नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य को एकाधिकार दे दिया है, को तोड़ने के लिए एक यात्रा का नेतृत्व करेंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नमक यात्रा

- साबरमती आश्रम → दाण्डी
- प्रारम्भ 12 मार्च, 1930 → 5 अप्रैल, 1930
- 6 अप्रैल 1930 को नमक कानून तोड़ा और सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ हो गया।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पूरे देश में अलग-अलग कानूनों का उल्लंघन किया गया।
- किसानों ने दमनकारी औपनिवेशिक वन कानूनों का उल्लंघन किया।
- कुछ कस्बों में फैक्ट्री कामगार हड़ताल पर चले गये। वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार कर दिया।
- विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षा संस्थानों में पढ़ने से इन्कार कर दिया।

- सरकार ने लगभग 60,000 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार होने वालों में गाँधी जी भी थे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रा के दौरान भाषण :–

- गाँधी जी ने स्थानीय अधिकारियों से आह्वान किया था कि वे सरकारी नौकरी छोड़कर स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल हो जायें।
- वसना गांव में ऊँची जाति वालों को संबोधित करते हुए कहा था कि “यदि आप स्वराज के हक में आवाज उठाते हैं तो आपको अछूतों की सेवा करनी पड़ेगी। सिर्फ नमक कर या अन्य करों के खत्म हो जाने से आपको स्वराज नहीं मिल जायेगा.....।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- स्वराज के लिए हिंदू, मुसलमान, पारसी और सिख, सबको एकजुट होना पड़ेगा। ये स्वराज की सीढ़ियां हैं।
- अपनी रिपोर्ट में जिला पुलिस सुपरिटेंडेंट ने लिखा था कि "श्री गांधी शांत और निश्चिंत दिखाई दिए। वे जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे हैं, उनकी ताकत बढ़ती जा रही है।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संवाद :–

- नमक यात्रा कम से कम तीन कारणों से उल्लेखनीय थी–

1. यही वह पहली घटना थी जिसके चलते महात्मा गांधी दुनिया की नजर में आए।
2. यह पहली राष्ट्रवादी गतिविधि थी जिसमें औरतों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

समाजवादी कार्यकर्ता कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने गांधी जी को समझाया कि वे अपने आंदोलनों को पुरुषों तक ही सीमित न रखें।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. नमक यात्रा के कारण ही अंग्रेजों को यह अहसास हुआ था कि अब भारत में उनका राज बहुत दिन तक नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा।

गोलमेज सम्मेलन :–

- ब्रिटिश सरकार ने लंदन में "गोलमेज सम्मेलनों" का आयोजन किया।
- उद्देश्य – भारतीयों से संवाद स्थापित करना और भारतीयों को सत्ता में कुछ हिस्सेदारी देना।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन – नवम्बर, 1930 (लंदन)

- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। अंततः यह बैठक निरर्थक साबित हुई।
- जनवरी, 1931 में गांधी जी को जेल से रिहा किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन – 1931



गांधी – इर्विन समझौता – 5 मार्च, 1931

शर्तें :-

1. सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेना।
2. सारे कैदियों की रिहाई और तटीय इलाकों में नमक उत्पादन की अनुमति देना।
3. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस सम्मेलन में गाँधी जी ने कांग्रेस का नेतृत्व किया।
- मुस्लिम लीग ने मुस्लिम अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधित्व का दावा किया।
- राजे-रजवाड़ों ने अपने हितों को ध्यान में रखकर भाग लिया।
- तीसरी चुनौती तेज-तर्रार वकील और विचारक बी.आर. अम्बेडकर की तरफ से थी।

निचली जातियों का प्रतिनिधित्व किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बी.आर. अम्बेडकर ने "'निम्न जातियों" (दलितों) के लिए पृथक निर्वाचक मण्डल की मांग रखी।
- गाँधी जी ने इस मांग का विरोध किया।

क्यों – उनका मानना था कि ऐसा करने पर समाज की मुख्यधारा में उनका एकीकरण नहीं हो पाएगा और वे सवर्ण हिन्दुओं से हमेशा के लिए अलग रह जाएंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

तृतीय गोलमेज सम्मेलन - 1932

- 1935 के नए गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट में सीमित प्रतिनिधिक शासन व्यवस्था का आश्वासन व्यक्त किया गया।
- सीमित मताधिकार के आधार पर हुए चुनावों में – 11 प्रान्तों में से 8 प्रान्तों में कांग्रेस सरकार बनी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

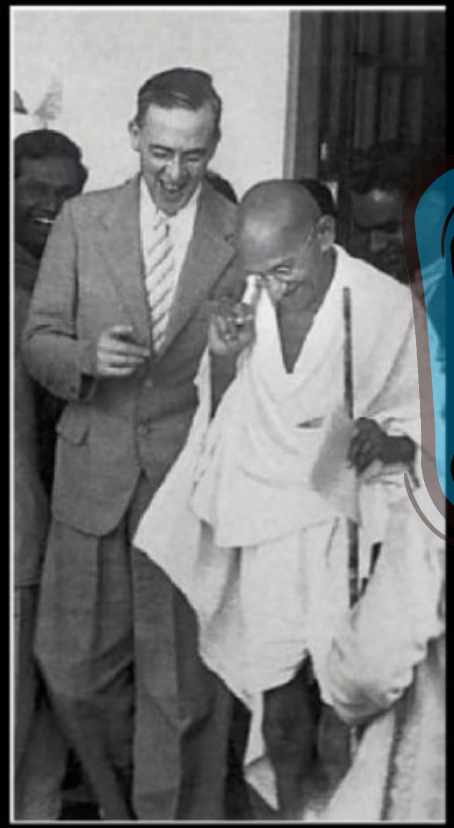
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सितम्बर, 1939 में दूसरा विश्वयुद्ध शुरु हो गया

- कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने अक्टूबर 1939 में इस्तीफा दे दिया।
- मार्च, 1940 में मुस्लिम लीग ने उपमहाद्वीप के मुस्लिम बहुल इलाकों के लिए कुछ स्वायत्ता की मांग का प्रस्ताव पेश किया।

अब संघर्ष - कांग्रेस Vs मुस्लिम लीग Vs ब्रिटिश शासन

क्रिप्स प्रस्ताव – 1942



- क्रिप्स मिशन (1942) की विफलता के बाद महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश भारत के खिलाफ अपना तीसरा बड़ा आंदोलन छेड़ने का फैसला किया।
- अगस्त, 1942 में शुरू हुए इस आंदोलन को 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' (अगस्त क्रान्ति) का नाम दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन - 1942

प्रारम्भ - अगस्त, 1942 बम्बई के ग्वालियर टैंक मैदान

- गांधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया।
- गाँधी जी और अन्य कांग्रेस के शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
- देश भर के युवा कार्यकर्ता हड़तालों और तोड़फोड़ की कार्रवाइयों के जरिए आंदोलन चलाते रहे।
- जयप्रकाश नारायण (समाजवादी कांग्रेस नेता) ने भूमिगत रहकर यह आंदोलन चलाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पश्चिम में सतारा और पूर्व में मदिनीपुर जैसे कई जिलों में “स्वतंत्र सरकार' (प्रतिसरकार) की स्थापना कर दी गयी थी।
- अंग्रेजों ने आंदोलन के प्रति काफी सख्त रवैया अपनाया, फिर भी इस विद्रोह को दबाने में सरकार को साल भर से ज्यादा समय लग गया।
- भारत छोड़ो आंदोलन, सही मायने में एक जन आंदोलन था जिसमें लाखों आम हिंदुस्तानी शामिल थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- युवाओं ने अपने कॉलेज छोड़कर जेल का रास्ता अपनाया।
- मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग इस आंदोलन से अलग रही।
- लीग पृथक पाकिस्तान की मांग कर रही थी।
- 1944 ई. में गांधी जी को जेल से रिहा कर दिया गया।
- गाँधी जी ने कांग्रेस और लीग के बीच फासले को पाटने के लिए जिन्ना के साथ कई बार बात की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1945 ई. में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी।
- प्रधानमंत्री – क्लीमेंट ऐटली
- यह सरकार भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी।
- वायसराय लॉर्ड वेवेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के बीच कई बैठकों का आयोजन किया।
- 1946 ई. की शुरुआत में प्रांतीय विधान मंडलों के लिए नए सिरे से चुनाव कराये गये।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सामान्य श्रेणी की सीटों पर कांग्रेस को भारी सफलता मिली।
- मुसलमानों के लिए आरक्षित सीटों पर मुस्लिम लीग को भारी बहुमत प्राप्त हुआ।
- अतः राजनीतिक ध्रुवीकरण पूरा हो चुका था।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कैबिनेट मिशन

- 1946 की गर्मियों में कैबिनेट मिशन भारत आया।
- इस मिशन ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग को एक ऐसी संघीय व्यवस्था पर राजी करने का प्रयास किया जिसमें भारत के भीतर विभिन्न प्रांतों को सीमित स्वायत्ता दी जा सकती थी।
- यह वार्ता भी विफल रही।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मोहम्मद अली जिन्ना ने लीग की पाकिस्तान की मांग के समर्थन में "प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस" का आह्वान किया।
- 16 अगस्त, 1946 लीग के द्वारा प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाया गया।
- पूरे भारत में साम्प्रदायिक दंगे शुरु हो गये।
- हिंसा कलकत्ता से शुरु होकर ग्रामीण बंगाल, बिहार और संयुक्त प्रान्त व पंजाब तक फैल गयी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- फरवरी, 1947 में लॉर्ड वेवेल की जगह लॉर्ड माउंटबेटन को वायसराय नियुक्त किया गया।
- माउंट बेटन ने वार्ताओं के अंतिम दौर का आह्वान किया।
- लेकिन सुलह के सभी प्रयास विफल रहे।
- अंत में उन्होंने घोषणा की कि ब्रिटिश भारत को स्वतंत्रता दे दी जायेगी लेकिन उसका विभाजन भी होगा।
- औपचारिक सत्ता हस्तांतरण के लिए 15 अगस्त, का दिन नियत किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 15 अगस्त, 1947 को राजधानी में हो रहे उत्सवों में महात्मा गाँधी शामिल नहीं थे। वे कलकत्ता में थे।
- गांधी जी उस दिन 24 घंटे के उपवास पर थे।
- उन्होंने इतने दिन तक जिस स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया था वह एक अकल्पनीय कीमत पर उन्हें मिली थी।
- उनका राष्ट्र विभाजित था : हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे की गर्दन पर सवार थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उनके जीवनी लेखक डी. जी. तेंदुलकर ने लिखा है कि सितंबर और अक्टूबर के दौरान गाँधी जी "पीड़ितों को सांत्वना देते हुए अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों के चक्कर लगा रहे थे।" उन्होंने 'सिखों, हिंदुओं और मुसलमानों से आह्वान किया कि वे अतीत को भुला कर अपनी पीड़ा पर ध्यान देने की बजाय एक दूसरे के प्रति भाईचारे का हाथ बढ़ाने तथा शांति से रहने का संकल्प लें...."

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कांग्रेस ने “दो राष्ट्र सिद्धांत" को कभी स्वीकार नहीं किया था। लेकिन अपनी इच्छा के विरुद्ध बंटवारे पर मंजूरी देनी पड़ी।
- गांधी जी और नेहरू के आग्रह पर कांग्रेस ने "अल्पसंख्यकों के अधिकारों" पर एक प्रस्ताव पारित कर दिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- "भारत बहुत सारे धर्मों और बहुत सारी नस्लों का देश है और उसे ऐसे ही बनाए रखा जाना चाहिए।" पाकिस्तान में हालात जो रहें, भारत "एक लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होगा जहां सभी नागरिकों को पूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे तथा धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना सभी को राज्य की ओर से संरक्षण का अधिकार होगा।" कांग्रेस ने आश्वासन दिया कि "वह अल्पसंख्यकों के नागरिक अधिकारों के किसी भी अतिक्रमण के विरुद्ध हर मुमकिन रक्षा करेंगे।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- गाँधी जी लगातार बंगाल में हिंसा ग्रस्त क्षेत्रों के दौरे कर रहे थे। कई स्थानों पर गांधी जी पर हमले भी हुए। लेकिन वे अविचलित अपना काम करते रहे।
- गाँधी जी ने स्वतंत्र और अखण्ड भारत के लिए जीवन भर युद्ध लड़ा। फिर भी, जब देश विभाजित हो गया तो उनकी यही इच्छा थी कि दोनों देश एक-दूसरे के साथ सम्मान और दोस्ती के संबंध बनाए रखें।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- गाँधी जी को विश्वास था कि “बुरी घड़ी बीत चुकी है" भारत के लोग अब “सभी वर्गों और धर्मों की समानता" के लिए काम करेंगे।
- उन्होंने यह आशा भी जतायी कि यद्यपि भौगोलिक और राजनीतिक रुप से भारत दो भागों में बंट चुका है लेकिन हृदय से हम सभी सदैव मित्र एवं भाई रहेंगे।
- बहुत सारे भारतीयों को उनका यह सहृदय आचरण पसंद नहीं था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 30 जनवरी, 1948 की शाम को गाँधी जी की दैनिक प्रार्थना सभा में एक युवक (नाथुराम गोडसे) ने उनको गोली मारकर मौत की नींद सुला दिया।
- पुणें का रहने वाला गोडसे एक चरमपंथी हिंदुत्ववादी अखबार का संपादक था।
- वह गांधी जी को “मुसलमानों का खुशामदी" कहकर उनकी निंदा करता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

काल रेखा

1915	महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से लौटते हैं।
1917	चंपारन आंदोलन
1918	खेड़ा (गुजरात) में किसान आंदोलन तथा अहमदाबाद में मजदूर आंदोलन
1919	रॉलेट सत्याग्रह (मार्च-अप्रैल)
1919	जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड (अप्रैल)
1921	असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलन
1928	बारदोली में किसान आंदोलन
1929	लाहौर अधिवेशन (दिसंबर) में ‘‘पूर्ण स्वराज" को क्रांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया जाता है।

1930	सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरु, दांडी यात्रा (मार्च-अप्रैल)
1931	गाँधी इर्विन समझौता (मार्च), दूसरा गोलमेज सम्मेलन (दिसंबर)
1935	गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट में सीमित प्रातिनिधिक सरकार के गठन का आवश्वासन
1939	कांग्रेस मंत्रिमंडलों का त्यागपत्र
1942	भारत छोड़ों आंदोलन शुरु (अगस्त)
1946	महात्मा गाँधी साम्प्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए नोआखली तथा अन्य हिंसाग्रस्त इलाकों का दौरा करते हैं।